श्रीलालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई-दिल्ली

प्रकाशन-परिचय



प्राप्तिस्थान

अनुसन्धान एवं प्रकाशन विभाग,

श्रीलालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ

शहीदजीत सिंह मार्ग, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-११००१६

दूरभाष—६५०८३१

श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ

प्रस्तावना

भारत की राजधानी में एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत-संस्थान के अभाव की पूर्ति के लिए **'अखिल भारतीय संस्कृत-साहित्य सम्मेलन'** ने विजय दशमी १९६२ ई० को संस्कृत विद्यापीठ' की स्थापना की। यह 'विद्यापीठ' के सौभाग्य का विषय था कि इसके प्रथम शासननिकाय की अध्यक्षता भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री ने स्वीकार की और उन्हीं के नेतृत्व में इसका **'अखिल भारतीय संस्कृत विद्यापीठ'** के नाम से पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) कराया गया।

स्व० श्री शास्त्रीजी की प्रेरणा से विद्यापीठ को बहुत बल मिला और उन्होंने प्रधानमन्त्री जैसे गौरवपूर्ण पद का दायित्व सम्भालते हुए भी इस संस्था के विकास में बहुत रुचि ली। वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में २६ दिसम्बर १९६४ को तथा २७ नवम्बर १९६५ ई० को नेपाल के महाराजाधिराज स्व० श्री महेन्द्र की उपस्थिति में सम्पन्न विद्यापीठ-भवन-शिलान्यास-समारोह में उन्होंने विद्यापीठ को एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था बनाने की घोषणा की। वे अपने जीवन के अन्तिम समय तक इसके अध्यक्ष रहे और उनके नेतृत्व में दो-तीन वर्ष के अन्दर ही इस संस्था ने देश की संस्कृत-शिक्षण-संस्थाओं में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया।

उनके निधन के पश्चात् विद्यापीठ की सेवाओं और स्वर्गीय श्री शास्त्रीजी के साथ विद्यापीठ के ऐतिहासिक सम्बन्ध को दृष्टि में रखते हुए भारत की **प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी** ने भी विद्यापीठ के सभापति पद को स्वीकार किया और उन्होंने २ अक्टूबर १९६६ को विद्यापीठ का भारत सरकार द्वारा अधिग्रहण (टेक ओवर) करने एवं श्री शास्त्री जी की सेवाओं को श्रद्धांजलि देने की दृष्टि से इसका नाम **"श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ"** रखने की घोषणा की। दिल्ली के तत्कालीन उपराज्यपाल **स्वर्गीय डा०**

आदित्यनाथ झा ने कार्यवाहक सभापति के रूप में विद्यापीठ की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

भारत सरकार ने शिक्षा मन्त्रालय में स्वायत्त संस्था (आँटोनामस बाडी) के रूप में १ अप्रैल १९६७ से विद्यापीठ का अधिग्रहण (टेक ओवर) कर लिया और इसके संचालन के लिए एक सभा की स्थापना की—जिसके सभापति भारत सरकार के तत्कालीन नागर-विमाननमन्त्री डा० कर्णसिंह जी रहे। दि० २१-१२-१९७० ई० से इस विद्यापीठ का 'राष्ट्रिय संस्कृत-संस्थान' ने अधिग्रहण (टेक ओवर) कर लिया। तव से इस विद्यापीठ का नाम "श्री लालवहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ" है।

यह विद्यापीठ सन १९६२ से १९६८ ई० तक "श्री कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय (विहार)" से सम्वद्ध रहते हुए वहाँ की शास्त्री, शिक्षा-शास्त्री एवं आचार्य परीक्षाओं के लिए अध्ययन-व्यवस्था करता रहा। तदनन्तर सन् १९६९-७० ई० के सत्र से 'शिक्षा-मन्त्रालय' की संस्तुति पर यह विद्यापीठ 'वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय' से सम्वद्ध किया गया और विश्वविद्यालय ने इसके लिए विशेष पाठ्यक्रम स्वीकार कर शिक्षा के इतिहास को नया मोड़ दिया।

सन् १९७१ ई० के सत्र से—प्राक् शास्त्री, शास्त्री, शिक्षाशास्त्री, आचार्य, विद्या-वारिधि (पी-एच० डी०) तथा विद्यावाचस्पति (डी० लिट्०)—उपाधि की परीक्षाओं के लिए 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान' द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन की व्यवस्था इस विद्यापीठ द्वारा की जाती है।

विद्यापीठ अव अपने भवन में काम कर रहा है और पुस्तकालय, छात्रावास एवं कर्मचारी आवासों के निर्माण का काम शीघ्र प्रारम्भ किया जा रहा है।

अभी विद्यापीठ का छात्रावास ई १२/६ वसन्त विहार, नई दिल्ली में स्थित है—जिसमें अभी स्थान का सर्वथा अभाव है।

—०—

श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के अन्तर्गत
अनुसन्धान एवं प्रकाशन-विभाग
के तत्त्वावधान में प्रकाशित

महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

---×---

काश्मीरेतिहासः

स्व० आचार्य श्री हनुमत्प्रसाद शास्त्री, पण्डित-मार्तण्ड

प्रकृति और पुरुष की अनुपम लीला-भूमि तथा मां सरस्वती के स्वच्छन्द विहार की स्थली काशमीर का अमरवाणी में प्रस्तुत यह इतिहास ग्रन्थ महाकवि कल्हण कृत 'राजतरंगिणी' की परम्परा का पूरक माना गया है। माननीय डा० कर्णसिंह जी के शब्दों में इस ग्रन्थ में काशमीर की प्राकृतिक श्री से लेकर इसके राजाओं, विद्वानों और वर्तमान काल तक की स्थिति का यथासम्भव प्रामाणिक इतिहास प्रौढ और प्राञ्जल संस्कृत भाषा में प्रस्तुत कर इसको सर्वाङ्गीण बनाने का प्रयास किया गया है।'

पृष्ठ सख्या—३१०　　　　मूल्य १५.००

गीतिकादम्बरी

कविरत्न श्री अमीरचन्द्र शास्त्री

ग्रन्थकार श्री शास्त्री जी वर्तमान संस्कृत कवियों में अपनी मधुर गीतिमय और प्रौढ़ रचनाओं के कारण सुप्रसिद्ध हैं। इनकी अनेक गीत्यात्मक रचनाएं इस ग्रन्थ में संकलित हैं।

उचित एवं ललित सन्निवेश का चमत्कार कवि के प्रत्येक पद्य से सहज प्राप्य है। प्रस्तुत रचना में श्रीमद्भागवतकथानुसार, रसकल्पतरु, हितकल्पतरु, संगीत-वृन्दावन, स्तुतिकादम्वरी, चरितकादम्वरी आदि प्रायः ७००० पद्यों के रूप में भाव गम्भीर कृतियां संकलित हैं। संस्कृत की समायिक काव्यधारा के परिशीलन के लिए इस रचना की विशेष उपयोगिता है।

मूल्य २०.००

पृष्ठ संख्या—५६८

अध्वर-मीमांसा कुतूहल-वृत्तिः [चार भागों में]

सम्पादक—विद्यासागर आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री

श्री वासुदेव दीक्षित द्वारा विरचित उपर्युक्त ग्रन्थ में श्रौतपदार्थों का समुचित उपादान करते हुए अतिगहन विषय को बहुत ही सरल-शैली में प्रतिपादित किया गया है। प्राचीन ग्रन्थकारों द्वारा अनिर्दिष्ट विषयों का विस्तार, भाष्यकारों के प्रति आदरपूर्ण दृष्टि रखते हुए भी विवेच्यविषयों की निर्भीक समालोचना तथा अग्निहोत्र, दर्शपूर्णमास, सप्त-संस्थाक ज्योतिष्टोम प्रभृति अध्वरां की मीमांसा के साथ सूत्रों की वृत्तिरचना इस ग्रन्थ की मौलिक विशेषताएं हैं।

मीमाँसादर्शन के ख्यातिप्राप्त आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्रीजी ने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक अनेक 'ताडपत्रीय पाण्डुलिपियों के आधार पर विशुद्ध पाठालोचन करते हुए इस ग्रन्थ का चार भागों में सम्पादन किया है। साथ ही प्रत्येक भाग में विस्तृत भूमिकाएं भी दी गई हैं।

१. प्रथम भाग—(अ० १,२,३), अनुक्रमणिकादि सहित

उत्तम कागज, आकर्षण मुद्रण, पक्की जिल्द,
पृ० सं०-६५४ — मूल्य : ३०.००

२. द्वितीय भाग—(अ० ४,५,६,७,८) पृ० सं० ५१८ — मूल्य : ३०.००

३. तृतीय भाग—(अ० ९,१०) पृ० सं० ३२० — मूल्य : १५.००

४. चतुर्थ भाग—(अ० ११,१२) पृ० सं० ३१० — मूल्य : ३१.००

पाणिनि, कात्यायन एण्ड पतञ्जलि (अंग्रेजी)

श्री के० माधवकृष्ण शर्मा

इस ग्रन्थ में श्रीशर्मा जी ने अपने शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त आचार्यों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनेक पद्धतियों से निरीक्षण परीक्षण करते हुए वास्तविक तथ्यों का अंकन इसकी अपनी विशेषता है। ग्रन्थकार ने अपने सुदीर्घ शास्त्र-परिशीलन का सार इसमें प्रस्तुत करने का पूरा प्रयास किया है।

उत्तममुद्रण, पृष्ठ संख्या—१६६ मूल्य १५-००

ऋग्वेद-कवि-विमर्शः

डा० मधुकर गो० माईणकर

यह ग्रन्थ संस्कृत साहित्य के यशस्वी विद्वान, बम्बई विश्वविद्यालय के भूतपूर्व संस्कृत-विभागाध्यक्ष प्रो० माईणकर द्वारा विद्यापीठ की 'शारदीय ज्ञान महोत्सव-'व्याख्यानमाला' में दिये गये तीन व्याख्यानों का संकलित रूप है। इसमें भारतीय और पाश्चात्य मनीषियों के मनन का सार प्रस्तुत करते हुए वैदिक ऋषियों के कविरूप एवं वेदों के काव्य का मौलिक व प्रामाणिक प्रतिपादन किया गया है।

"१-वैदिककविमनसः पृष्ठभूमिः २-वैदिक-कवीनां काव्य-विचारः तथा ३-वैदिक-कवीनां काव्यविषयविचारः" ये तीन विषय इस ग्रन्थ में सुचारुरूप से प्रतिपादित हैं -

उत्तम मुद्रण, सम्पूर्ण पृष्ठ संख्या—५६, मूल्य ३.००

पञ्चामृतम् [अंग्रेजी]

इस ग्रन्थ में 'शारदीय ज्ञानमहोत्सव-व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत दिये गये व्याख्यानों से क्रमशः डा० नाकामुरा विद्यावाचस्पति, टोकियो विश्वविद्यालय के—१-'बुद्धशिलालेखों के द्वारा दर्शित वेदान्तदर्शन,' म० म० डा० वी० वी० मिराशी के—राष्ट्रकूट और कालिदास की तिथि, डा० एस० एम० कत्रे के—३-'आधुनिक भारत में संस्कृत,' डा० लूथर लुट्ज के

४-' व्रिच थियेटर' : संस्कृत नाटक में एक नवीन दिशा तथा हिन्दी के ख्याति-प्राप्त विद्वान डा० नगेन्द्र के—५-सौन्दर्यात्मक अनुभवों की प्रवत्ति' शीर्षक ५ व्याख्यान संकलित हैं।

व्याख्यानदाताओं का विख्यात वैदुष्य प्रत्येक विषय की गम्भीर समीक्षा प्रस्तुत करने में पूर्ण निखार को प्राप्त हुआ है।

सम्पूर्ण ग्रन्थ सुन्दर मुद्रण एवं पक्की जिल्द में प्रस्तुत है।

पृष्ठ संख्या १३६ मूल्य १५-००

◙ प्रमाण-प्रमोदः

महामहोपाध्याय श्री चित्रधर शर्मा

सम्पादिका—श्रीमती उज्ज्वला शर्मा

यह ग्रन्थ न्यायशास्त्र के अद्वितीय विद्वान म० म० श्रीचित्रधर शर्मा की अनुपम कृति है। इसमें उदयनाचार्य की 'न्यायकुसुमाञ्जलि' की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए नव्यन्याय की शैली से ईश्वरसिद्धि की विवेचना का विषय बताया गया है। साथ ही इसी परम्परा के उद्भट विद्वान म० म० श्री दुखमोचन झा द्वारा निर्मित इस ग्रन्थ की महत्त्वपूर्ण व्याख्या भी इस ग्रन्थ में प्रकाशित है। विदुषी सम्पादिका ने विभिन्न पाण्डुलिपियों का परिशीलन करके अपनी विस्तृत भूमिका से सम्पन्न यह प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत किया है।

उत्तम मुद्रण, सुन्दर जिल्द, पृष्ठ संख्या १७८ मूल्य ७-५०

◙ नित्यकर्मप्रकाशः

श्री भवानीशंकर त्रिवेदी

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के प्रचार-प्रसारात्मक लक्ष्य की पूर्ति को ध्यान में रखकर प्रारम्भिक परिचय के लिए उक्त ग्रन्थ का संयोजन किया गया है। श्री त्रिवेदी जी ने वर्तमान जनसाधारण के मानस एवं अपेक्षा को दृष्टि में रखकर इसमें—हिन्दू-धर्म के आधार

ग्रन्थ एवं प्रातः कृत्य (स्मरण, सन्ध्या, ब्रह्मयज्ञ, तर्पण और देवार्चन) आदि की शास्त्र-सम्मत विधि का संकलन किया है। पुस्तक अध्येताओं के लिए पूर्ण उपादेय है।

छोटा आकार, पृष्ठ संख्या—१६२ मूल्य ४.००

संस्कृत-साहित्य में शब्दालङ्कार

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

यह ग्रन्थ विद्वान लेखक द्वारा 'विक्रम-विश्वविद्यालय-उज्जैन की पी-एच० डी० उपाधि के लिए लिखा गया था। जहां, एक और इसमें अपने विषय की गरिमा के अनुरूप विस्तृत और सुस्पष्ट विवेचन है वही दूसरी ओर बड़े व्यापक परिवेश में विभिन्न शब्दालङ्कारों के स्वरूप तथा भेद उपभेद आदि निरूपित किए गए हैं। विभिन्न प्राचीन पाण्डुलिपियों, पत्रलेखों, राजकीय सम्मान-पत्रों तथा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त एवं स्वयं लेखक द्वारा निर्मित लगभग ३५० चित्रबन्धों का ६ भागों में स्वतन्त्र विश्लेषण इस ग्रन्थ में अद्भुत है। देश के विभिन्न विद्वानों ने इस विषय पर लिखित अपने ढंग का एक अनूठा एवं पहला ग्रन्थ कहकर इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इसमें अनुप्रास के २००, यमक के ४००, श्लेष के ७४, स्वर-स्थानादि चित्रों के ५३५ भेदोपभेदों का क्रमिक विमर्श है साथ ही १४४ दुर्लभ चित्रबन्धों का सचित्र प्रकाशन चित्र-बन्ध-साहित्य जिज्ञासुओं के लिए विशेष उपादेय है।

सम्पूर्ण पृष्ठ संख्या—५७८ मूल्य ४०.००

रस-सिद्धान्तः

मूल लेखक—डा० नगेन्द्र

संस्कृतानुवादक—श्री अमीरचन्द्र शास्त्री

हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान डा० नगेन्द्रजी की महत्त्वपूर्ण कृतियों में रस-चिन्तन की दृष्टि से इस ग्रन्थ का सर्वत्र समादर हुआ है तथा देश की अन्य भाषाओं में भी इसके अनुवाद हुए हैं।

इस ग्रन्थ के ६ अध्यायों में संस्कृत, हिन्दी एवं पाश्चात्य वाङ्मय के रस सिद्धांत-विवेचन मनीषियों के विचारों का आलोचनात्मक मर्मस्पर्शी मंथन हुआ है।

ऐसे अपूर्व ग्रन्थ का आस्वाद संस्कृत के विद्वानों को भी प्राप्त हो तथा वे प्राचीन-अर्वाचीन रस- विमर्श का सरलता से परिशीलन कर सकें इस उदार-भावना से विद्यापीठ के साहित्य-विभागाध्यक्ष, कविरत्न श्री अमीरचन्द्र शास्त्री साहित्याचार्य ने ललित, प्रौढ़ एवं सुबोध संस्कृत भाषा में इसका अनुवाद प्रस्तुत किया है। साथ ही श्री शास्त्रीजी ने सभी अध्यायों का सार कारिका-बद्ध करके तथा हिन्दी कविताओं का संस्कृत में पद्यवद्ध अनुवाद करके ग्रन्थ का सर्वांगीण एवं श्लाघनीय सम्पादन भी किया है।

उत्तम कागज, आकर्षण आवरण, पक्की जिल्द,

पृष्ठ संख्या—३२८, मूल्य १५-००

ऋतु इन संस्कृत लिट्रेचर (अंग्रेजी)

पद्मभूषण, डा० वी० राघवन

प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत जगत् के सुविख्यात विद्वान डा० राघवन के विद्यापीठ द्वारा १९७१ ई० में आयोजित शारदीय ज्ञान महोत्सव में दिये गये भाषणों का सङ्ग्रह है। हमारा देश वास्तव में विभिन्न ऋतुओं की अद्भुत क्रीडाभूमि है। फलतः वैदिक काल से लेकर लौकिक संस्कृत के युग तक ऋतुवर्णनसम्बन्धी विशाल साहित्य उपलब्ध होता है। विद्वान व्याख्याता ने इसी विस्तृत परिवेश में सम्पूर्ण सामग्री का गम्भीर आकलन (अंग्रेजी भाषा में) प्रस्तुत किया है जिसमें समस्त संस्कृतवाङ्मय में इतस्ततः विकीर्ण ऋतुवर्णनों का विवेचनात्मक मथितार्थ समाविष्ट है।

भारतीय प्रकृति साहित्य की छवि को निहारने के लिए यह ग्रन्थ वस्तुतः एक निर्मल दर्पण है।

उत्तम सम्पादन, मुद्रण एवं आधुनिक साजसज्जा से समलंकृत।

पृ० सं० २१४ मूल्य ३०-००

बौद्धालङ्कार-शास्त्रम्

अनु० तथा सं० डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी

प्रस्तुत ग्रन्थ में महास्वामी संघरक्षित के 'सुबोधालंकार' तथा राजा शिलामेघसेन के

'स्वभाषालंकार' नामक दो ग्रन्थों का संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सहित एकत्र संकलन है। इसमें सिंहली भाषा के ग्रन्थ स्वभाषालंकार एवं पाली भाषा के वर्मी लिपि में प्राप्त सुबोधालंकार की संस्कृत छाया एवं हिन्दी अनुवाद विशिष्ट भूमिका के साथ संकलित है अलंकारचिन्तन की परम्परा में बौद्ध आचार्यों की इस मौलिक देन का समादर हुआ है।

अंग्रेजी में १४ पृष्ठों की विशिष्ट भूमिका सहित उत्तम मुद्रण से मण्डित।

पृष्ठ संख्या २४२ मूल्य १५-००

संचारी भावों का शास्त्रीय अध्ययन

डा० रघवीर शरण व्यथित

यह ग्रन्थ डा० रघुवीरशरण द्वारा पी-एच० डी० उपाधि के लिए लिखे गये शोध प्रबन्ध का अविकल रूप है। संचारी भावों के विवेचन में ग्रन्थकार की मौलिक सूझ का परिचय ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ पर सहज उपलब्ध किया जा सकता है। इसमें स्थान-स्थान पर पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का भी उपयोग किया गया है। मनश्शारीर स्तर पर संचारी भावों का विवेचन इस ग्रन्थ का उल्लेखनीय अध्याय है। न केवल संस्कृत-साहित्य अपितु हिन्दी-साहित्य के रीतिकाल तथा आधुनिक काल की संचारी भाव सम्बन्धी सामग्री का भी इस ग्रन्थ में संयोजन और विवेचन है।

उत्तम मुद्रण एवं आधुनिकतापूर्ण सम्पादन से मण्डित।

पृ० सं०—३५५ मूल्य २०-००

अध्ययन-माला (प्रथम-कुसुमम्)

प्र० सं० डा० पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा

सम्पादक डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

विद्यापीठ में अध्यापनादिरत विद्वानों एवं शोधस्नातकों की अनुसन्धानमूलक प्रवृत्ति की परिचारिका के रूप में सन् १९७३ ई० से उक्त "अध्ययन-माला" का प्रकाशन आरम्भ किया गया है। प्रस्तुत प्रथम कुसुम के पूर्वभाग में शारदीय-ज्ञानमहोत्सव १९७३ ई० में दिये

गये ५ मननपूर्ण भाषणों एवं अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी भाषा में निवद्ध ८ अन्य शोधपूर्ण लेखों का संग्रह किया गया है, जिनमें व्याकरण, वेदान्त शास्त्र, शाक्तदृष्टि, चित्रकाव्य, दूतकाव्य-परम्परा, साधारणीकरण, न्यायदर्शन, हिन्दी गीतिकाव्य, भट्टश्रीनागेश के सिद्धान्त और ज्योतिष एवं पुराण की दृष्टि से सूर्य-विचार जैसे विषयों पर विवेचन हुआ है।

मूल्य १०-००

पृ० सं०—२०८

केवल ८ लेखों के संग्रह का मूल्य ६-००

प्रवचन-पारिजातः [भाषण-सङ्ग्रहः]

प्रस्तुत ग्रन्थ में संस्कृत-संसार के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के प्रणेता श्री चारुदेव जी शास्त्री तथा श्री श्रीजीवन्याय तीर्थजी के ३-३ भाषणों का संग्रह प्रकाशित है। विद्यापीठ द्वारा आयोजित शारदीय ज्ञान महोत्सव सन् १९७३ ई० के सत्र में उपर्युक्त विद्वानों ने क्रमशः व्याकरण एवं वेदान्त विषयों पर ये भाषण दिये थे। इनमें प्रमुख रूप से उपसर्गों के उपकारकत्व और उनके अर्थ, वेद में धातु और उपसर्गों का योग तथा उपसर्गों के कारण धातुओं की सकर्मकता तथा वर्तमान भारत में वेदान्तवाद की उपयोगिता एवं वेदान्त के स्वरूप' पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन प्रस्तुत हुआ है।

पृ० सं—६४

मूल्य ६-००

म० म० पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री-स्मृति-ग्रन्थ

प्र० सं०—डा० पुष्पेन्द्रकुमार शर्मा

सम्पादक—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

अध्ययनमाला के २, ३, ४ कुसुमों के रूप में प्रकाशित इस ग्रन्थ में विद्यापीठ के भूतपूर्व प्राचार्य एवं संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान म० म० श्री परमेश्वरारन्द जी शास्त्री का जीवन-चरित्र उनके सम्बन्ध में संस्मरण, शारदीय व्याख्यानमाला (१९७३-७४) में दिए गए पं० दीनानाथ जी शास्त्री एवं डा० सत्यव्रतजी शास्त्री के भाषणों का संग्रह, विभिन्न विषयों पर देश के अनेक विद्वानों द्वारा लिखे गए ४२ शोधपूर्ण लेख, हिन्दी अनुवाद एवं विस्तृत भूमिका सहित 'राघवाह्निकम्' गीतिकाव्य तथा श्री गङ्गारामजडीरचित मूल एवं छाया टीका

से युक्त हिन्दी अनुवाद सहित 'रसमीमांसा का प्रकाशन हुआ है। इस प्रकार यह ग्रन्थ बहुत ही उपादेय सामग्री से परिपूर्ण होने के कारण विद्वानों में सर्वत्र समादृत हुआ है।

पृ० सं०—६०० मूल्य ३५.००

जीवन-परिमल

लेखक डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

म० म० पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री जी के प्रामाणिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत करने वाली यह कृति डा० त्रिपाठी ने बड़े ही मनोयोग तथा परिश्रम से दुर्लभ पत्रादि प्राप्त करके लिखी है। शास्त्री जी के सरल जीवन एवं मार्मिक वैदुष्य के दर्शन कराने के लिए उनके विविध पक्षों को सोदाहरण संकलित किया है। इसके अतिरिक्त इसमें कविरत्न श्रीअमीरचन्द्रशास्त्री का संस्मरणात्मक 'पृथ्वीप्रशस्ति' काव्य तथा महामहोपाध्यायजी के सम्पर्क से सुरभित विद्वानों के संस्मरण भी प्रकाशित हैं।

पृ० सं०—११६ मूल्य ३-००

भाषण-भूषणम्

पं० श्री दीनानाथ शास्त्री सारस्वत

—डा० सत्यव्रत शास्त्री

संस्कृत के क्षेत्र में अपनी महनीय सेवाओं के कारण सुविख्यात इन दोनों मनीषियों द्वारा शारदीय ज्ञान महोत्सव व्याख्यानमाला (१९७४-७५ ई०) में दिये गए छह भाषणों का यह संग्रह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें क्रमशः '१—द्वैतवादाद्वैतवादयोः सामञ्जस्यम् २—वेदस्वरूपनिरूपणम्, ३—पौराणिकचरित्रपर्यालोचनम्, ४—धात्वर्थविचारः, ५—स्फोट-विचारः, तथा संस्कृते पर्यायवाचिनः शब्दाः' शीर्षक छह भाषणों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।

पृ० सं—११६ मूल्य ३-००

राघवाह्निकम्

—ले० श्री सोमनाथ व्यास

—सं० प्रो० बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

—अनुवादक तथा सं० डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

गीत-गोविन्द की परम्परा में लिखित इस गेयकाव्य के सात सर्गों में भगवान रामचन्द्र के प्रातः काल जागरण से लेकर रात्रिशयन काल तक के कार्यकलापों को अत्यन्त सरस गेय पद्यों से प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थकार सोमनाथ व्यास साजापुर (मध्य प्रदेश) के निवासी थे इनका समय १८ वीं शती का अन्त्यभाग है। सिन्धिया प्राच्यग्रन्थागार-उज्जैन की दो पाण्डुलिपियों के आधार पर सम्पादित इस काव्य का हिन्दी अनुवाद, गीतिकाव्यों की परम्परा में अब तक उपलब्ध प्रायः ६० गीति काव्यों की परिचयात्मक भूमिका का लेखन तथा सम्पादन डा० रुद्रदेव त्रिपाठी ने किया है।

पृ० सं०-५६ मूल्य १-००

रस-मीमांसा

मूल एवं टीका—श्रीगङ्गाराम 'जड़ी'

हिन्दी टीका—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

स्वोपज्ञ 'छाया' टीका सहित यह ग्रन्थ लगभग १०० वर्ष पूर्व शिला-मुद्रण के रूप में प्रकाशित हुआ था। इनका 'ज्योतिष्मती' नामक हिन्दी व्याख्यान एवं भूमिका सहित सम्पादन डा० त्रिपाठी ने किया है। रस तथा भावों के संक्षिप्त एवं सरल परिज्ञान के लिए ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है।

पृष्ठ संख्या-६४ मूल्य १-२५

चान्द्रव्याकरणवृत्तेः समालोचनात्मकमध्ययनम्

डा० हर्षनाथ मिश्र

यह ग्रन्थ दिल्ली विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-

प्रबन्ध का परिष्कृत रूप है। इसके लेखक डा० हर्षनाथ मिश्र ने संस्कृत व्याकरण का पारम्परीण और आधुनिक दोनों पद्धतियों से अध्ययन किया है।

ग्रन्थ के प्रथम भाग में चान्द्रव्याकरण के द्वारा दिखाये गए सुधार के मार्ग पर चलने वाले कुछ प्रमुख बौद्धवैयाकरणों के संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित योगदान की चर्चा की गयी है और द्वितीय भाग में पाणिनि के उक्त, अनुक्त और द्विरुक्त पर चिन्तन प्रस्तुत करने वाले बौद्ध वैयाकरण चन्द्रगोमी के साथ चान्द्र व्याकरण और उसकी स्वोपज्ञ वृत्ति की गुणदोष विवेचनात्मक स्वस्थ समालोचना की गयी है। पाणिनीय व्याकरण के साथ चान्द्र व्याकरण की तुलना तथा व्याकरण जगत् में फैली हुई कुछ भ्रान्तियों के निराकरण ने इस ग्रन्थ के महत्व में चार चांद लगा दिए हैं।

यह ग्रन्थ व्याकरण के अध्येता छात्रों तथा विद्वानों के लिए उपयोगी है।

मूल्य २३-००

पृ० सं०-२६०

देवीपुराणम्

सं० डा० पुष्पेन्द्रकुमार शर्मा

वाङ्मय की महत्त्वपूर्ण विधियों में पुराण-शास्त्र का विशिष्ट स्थान है। हमारे कई पुराण आज भी अप्रकाशित हैं अथवा अन्यान्य लिपियों में लिखित-मुद्रित होने के कारण सर्वसुलभ नहीं हो पाये हैं। प्रस्तुत 'देवीपुराणम्' भी अब तक वंगलिपि में ही मुद्रित हुआ था। डा० पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा ने इस ग्रन्थ का विभिन्न पाण्डुलिपियों के आधार पर पाठान्तर तथा संशोधन-पूर्वक देवनागरी संस्करण तैयार किया और विषय की गम्भीरता तथा महत्ता को स्पष्ट करते हुए आलोचनात्मक पद्धति से एक विस्तृत भूमिका से मण्डित कर ग्रन्थ को सर्वोपयोगी बनाया है।

मूल्य ४०-००

पृष्ठ संख्या-५८६

श्री महावीर-परिनिर्वाण-स्मृति ग्रन्थ

प्रधान सं०—डा० मण्डन मिश्र

सम्पादक—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

अनुसन्धान-विभागीय षाण्मासिक प्रकाशन 'अध्यनमाला' के चतुर्थ एवं पञ्चम कुसुम

के रूप में प्रकाशित यह विशेषांक तीन भागों में संकलित है। जिसमें प्रथम भाग 'श्री महावीरचरितामृतम्' द्वितीय भाग—'आर्हत धर्म-सुषमा' तथा तृतीय भाग 'जैनवाङ्मयानुशीलनम्' के रूप में चरित एवं ४१ शोधपूर्ण लेख प्रकाशित हैं। संक्षेप में यह ग्रन्थ जैन-सम्प्रदाय और जैन वाङ्मय की सभी विधाओं को प्रस्तुत करने वाला एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन माना गया है।

पृष्ठ संख्या-३२० मूल्य २१-००

श्री महावीरचरितामृतम्

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

भगवान महावीर के २५०० वें परिनिर्वाण वर्ष को लक्ष्य में रखकर उनके अनेक रूपों में प्रकाशित जीवन चरित्रों के आधार पर सरल संस्कृतभाषा में आलिखित यह लघु ग्रन्थ संक्षेप में जीवन-चरित तथा जैनागमादि का मञ्जुल स्वरूप प्रस्तुत करता है।

पृष्ठ संख्या-५० मूल्य १-००

परिभाषेन्दुशेखरः (नागेशभट्टकृतः)

व्याख्याकार तथा सम्पादक डा० हर्षनाथ मिश्र

परिभाषा ग्रन्थों की रचना सूत्रों की व्याख्या और उनके परस्पर विरोधी कथनों के सामंञ्जस्य के लिए की जाती रही है। नागेश भट्ट जो कि १७वीं शताब्दी के अन्त या १८वीं शती के आरम्भ में हुए थे) ने एक बहुत ही पाण्डित्य पूर्ण व्याकरण ग्रन्थ लिखा, जो कि परिभाषेन्दुशेखर के नाम से विख्यात है। यह ग्रन्थ स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम में भी निर्धारित है। अभी तक छात्रों द्वारा इस ग्रन्थ के अध्ययन में सरल टीकाओं के अभाव के कारण, कठिनाई का अनुभव किया जाता था। श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के रीडर डा० हर्षनाथ मिश्र ने इस ग्रन्थ पर दुर्गा नामक संस्कृत व्याख्या और हिन्दी टिप्पणियां लिखी हैं जिससे कि छात्रों को भी नागेश के मन्तव्यों की गहराई तक पहुंचने में बड़ी सहायता मिल सकती है।

संस्कृत और हिन्दी टीकाओं सहित मूल ग्रन्थ का प्रकाशन दिल्ली विद्यापीठ द्वारा किया गया है।

पृष्ठ—८५० मूल्य ७५-००

अन्वेषणा (शोधपत्रिका विशेषांक:)

प्रधान सम्पादक—डा० मण्डन मिश्र

सं०—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

यह विद्यापीठ की शोध पत्रिका (१९७६-७७) का एक विशेषांक है। यह चार भागों में विभक्त है। चारों भागों की सामग्री निम्नलिखित है:—

प्रथमो भाग (व्याख्यान वल्लरी)

१. भारतीय राजनीति— स्व० पंडितराज श्री राजेश्वर शास्त्री
२. सोमस्वरूप विमर्श:— आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री
३. शून्य निरालम्बमवादयो भट्टपादीया दृष्टि:— " "
४. जैमिनि स्तत्कृतन्यायानां लोकोपयोगित्वम् " "
५. काव्यं साहित्यं च— स्व० म० म० श्री छज्जूराम शास्त्री
६. सांख्यदर्शन परिचय: " "

द्वितीयो भाग: (अनुसन्धानप्रक्रियाप्रसूनानि)

इस भाग में शोध प्रक्रिया सम्बन्धी विषयों पर ७ लेख समाविष्ट हैं।

तृतीयो भाग (शोधसौरभम्)

इसमें विभिन्न विषयों पर शोधपूर्ण लेखों का समावेश किया गया है।

▣ चतुर्थो भागः (लघुपुस्तिका)

इस भाग में श्री रामावतार शर्मा द्वारा रचित 'चित्रबन्धावतारिका' नामक एक लघु पुस्तिका का समावेश किया गया है। तथा कुछ आकृति मूलक चित्रबन्ध भी परिशिष्ट में दिये हैं।

मूल्य ३३-००

▣ शास्त्र-दीपिका (प्रथम भाग)

सम्पादक—आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री

मीमांसा शास्त्र के ग्रन्थों में म० म० पार्थसारथि मिश्र शास्त्रदीपिका का महत्त्व पूर्ण स्थान है। (इस संस्करण में मूल ग्रन्थ का तर्कपाद नहीं है) इसमें तत्सत् श्री राम भट्ट के आत्मज तत्सत् श्री वैद्यनाथ भट्ट द्वारा विरचित प्रभा व्याख्या (पाचवें अध्याय तक) का समावेश किया गया है। ग्रन्थ का सम्पादन सुप्रसिद्ध मीमांसाचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्रीजी ने किया है। इसमें श्री शास्त्री जी ने वहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका भी दी है।

पृष्ठ ३२५ मूल्य ५०-००

▣ शास्त्र दीपिका (प्रभा सहिता) (द्वितीयो भागः)

सम्पादक—आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री

श्री पार्थसारथि द्वारा विरचित एवं तत्सत् वैद्यनाथ प्रभा सहित द्वादशाध्याय के चतुर्थ पाद तक का सभी विषय भाग में समाविष्ट है।

पृ० सं० ६५० मूल्य ८०·००

▣ शोध प्रभा (त्रैमासिकी शोध-पत्रिका)

प्र० सं० डा० मण्डन मिश्र, प्राचार्य

सं०—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

यह विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित त्रैमासिकी शोध पत्रिका है। इसमें अनेक प्रतिष्ठित

विद्वानों द्वारा लिखे गये शोध लेख समाविष्ट हैं। इसके निम्नलिखित अंक बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

आठवां अंक	जनवरी १९७८	मूल्य १२-००
नवां अंक	अप्रैल १९७८	" १२-००
दसवां अंक	जुलाई १९७८	" १२-००
ग्यारहवां अंक	अक्टूबर १९८०	" १२-००
बारहवां अंक	जनवरी १९८१	" १२-००
तेरहवां अंक	अप्रैल १९८१	" १२-००

चित्रबन्धावतारिका (म० म० श्रीरामावतारशर्मा प्रणीत)

प्र० सम्पादक—डा० मण्डन मिश्र

संयोजक एवं अनुवादक—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

सुप्रसिद्ध विद्वान म० म० रामावतार शर्मा जी द्वारा निर्मित चित्रबन्धात्मक पद्यों को चित्रालंकार की दृष्टि से पांच प्रकरणों में विभक्त करके यह पुस्तक डा० त्रिपाठी ने तैयार की है। साथ ही प्रत्येक बन्ध की निर्माण पद्धति के लिये लक्षण रूप में पद्य और हिन्दी विवेचन भी दिया है। यह कृति अब तक अप्रकाशित एवं अनुद्धृत थी। अतः इसका नवीन नामकरण करके प्रकाशित किया गया है। परिशिष्ट में चित्रबन्धों की आकृतियां भी मुद्रित हैं।

पृष्ठ-६१ मूल्य २-५०

व्याख्यान-वल्लरी

यह विशेष भाषणों का संग्रह है। इसमें (१) पण्डितराज राजेश्वर शास्त्री द्राविड़, (२) आचार्य श्री पट्टाभिराम शास्त्री (३) प्रो० हीरेन मुकर्जी और (४) स्व० म० म० श्री छज्जूराम शास्त्री जी के विशिष्ट भाषणों को संकलित किया गया है।

पृष्ठ १४९ मूल्य ४-००

धूर्तनर्तकम्

लेखक—श्री सामराज दीक्षित

सम्पादक—प्रो० बाबूलाल शुक्ल

यह एक प्रहसन है। इसमें मूल रचना ३२ पृष्ठों में है। इसकी विस्तृत भूमिका डा० रुद्रदेव त्रिपाठी ने ४० पृष्ठों में लिखी है और उसमें अब तक के प्रकाशित एवं अप्रकाशित १५० से भी अधिक संस्कृत प्रहसनों का समीक्षात्मक विस्तृत विवरण दिया है।

पृष्ठ ७५ मूल्य २-००

शांकरस्तोत्रद्वयम्

सम्पादक—डा० सी० आर० स्वामीनाथन्

यह भगवत् पाद श्री शंकराचार्य द्वारा रचित दुर्लभप्राय दो स्तोत्रों का संग्रह है। इसका सम्पादन डा० सी० आर० स्वामिनाथन ने किया है। साथ ही लघु-भूमिका एवं स्तोत्रों का अंग्रेजी और हिन्दी में अनुवाद भी प्रस्तुत है।

पृष्ठ २२ मूल्य १-२५

सर्वदर्शन-समन्वयः

म० म० पण्डितराज डा० गोपाल शास्त्री दर्शनकेसरी

विद्यापीठ द्वारा प्रतिवर्ष सम्पन्न की जाने वाली 'शारद व्याख्यानमाला' में दर्शन केशरी जी द्वारा प्रदत्त भाषणों के आधार पर संकलित यह ग्रन्थ दर्शन की विभिन्न धाराओं का निर्देशक है। श्री शास्त्री जी ने अपनी प्रौढ प्रतिभा के प्रकाश में आस्तिक, नास्तिक, स्वदेश-विदेशी सभी दर्शनों का वास्तविक चिन्तन इसमें प्रस्तुत किया है। ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है।

पृष्ठ १०० मूल्य १३-००

श्रीदामचरितम्

मूल—सम्पादक—प्रो० बाबूलाल शुक्ल एम० ए० एवं प्राक्कथन
सम्पादक—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

पण्डित कवि श्री सामराज दीक्षित द्वारा निर्मित यह नाटक अपने क्षेत्र की अनूठी रचना है। संस्कृत साहित्य में नाटकीय दृष्टि से सुदामा के चरित्र को उर्वरित करने वाला यह पहला नाटक है। प्राञ्जल भाषा, मधुर कवित्व एवं वर्ण्य विषय की अभिनव प्रस्तुति के कारण इस नाटक का महत्व अत्यधिक स्पृहणीय है। प्रो० श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य द्वारा इसका यशस्वी सम्पादन हुआ है तथा डा० रुद्रदेव त्रिपाठी ने इस पर विस्तृत प्राक्कथन २४ पृष्ठ में लिखकर विषय वस्तु की समीक्षा की है साथ ही सुदामा से सम्बद्ध हिन्दी आदि भाषा की कृतियों का भी परिचय इसमें समाविष्ट है।

पृष्ठ १००　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　मूल्य ७-००

कृष्णयजुर्वेदीय-तैत्तिरीय संहिता (प्रथमो भागः)

(सायण-भाष्य-हिन्द्यनुवाद-समन्विता)

सं० अनुवादक—म० म० परमेश्वरानन्द शास्त्री

सायणाचार्य-विरचित भाष्य से युक्त 'कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता का हिन्दी अनुवाद एवं टिप्पणियों से विभूषित यह भाग महामहोपाध्याय जी के अपार परिश्रम की परिणति है। अनुवाद शैली भाष्य पद्धती के समान होने से सभी जटिल विषयों का सार अत्यन्त सरलता से समझाया गया है। **प्रथम काण्ड के प्रथम प्रपाठक के पंचम अनुवाक का यह प्रथम भाग** कविरत्न श्री अमीरचन्द्र शास्त्री तथा डा० रुद्रदेव त्रिपाठी ने सम्पादित किया है। ग्रन्थ संग्रहणीय है।

पृष्ठ ३२८, २०×३०, १/८　　　　　　　　　　　　　　मूल्य ३२-००

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-खड्गमाला

ले०—डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

श्रीमद् आद्य शंकर भगवत् पादाचार्यवर्य प्रणीत, 'यतिदण्डैश्वर्य-विधान' के अन्तर्गत 'श्रीत्रिपुरास्तोय' के आधार पर संकलित, मेधासाम्राज्य पर्यन्त, सृष्टिक्रम रूप सम्बुद्धयन्त

'श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-खड्गमाला' का यह प्रकाशन सर्वप्रथम हुआ है। अब तक जो 'खड्ग-माला' प्रकाशित हुई है उनमें केवल यन्त्रपूजा के नवावरण तक का ही क्रम मुद्रित है, जब कि इसमें षोडशावरण का क्रम संगृहीत है। इसके साथ ही इसमें—१ षष्ट्युत्तर त्रिशत शक्ति नामावली, २ श्री त्रिपुरसुन्दरी त्रिशती नामावली, ३ चतुरशीत्युत्तर शतमहालक्ष्मी नामावली, ४ श्रीदेवीवैभवीश्चर्याष्टोत्तर शतदिव्य नामावली तथा ५ सर्वावरण-समष्टि-पुष्पाञ्जलि नामक पांच अन्य दुर्लभ नामावलियों का भी प्रकाशन होने से इसका और भी महत्त्व बढ़ गया है।

इस पुस्तक का प्राक्कथन 'श्रीयन्त्र-दीपिका' के नाम से जो लिखा गया है, उसमें श्रीयन्त्र के सम्बन्ध में अनेक लक्ष्यों का उद्घाटन, अर्चना-पक्ष का निर्वाचन तथा खड्गमाला के विविध प्रयोगों का निदर्शन हिन्दी भाषा में हुआ है। डा० रुद्रदेव त्रिपाठी ने इस पुस्तक को साङ्गोपाङ्ग, बनाने का पूरा प्रयास किया है, ऐसा अधिकृत विद्वानों का मन्तव्य है।

पृष्ठ ६४ मूल्य ५-५०

आकार २०×२६ १/८

